International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मूल्य आधारित शिक्षा: एक अध्ययन भारतीय परिप्रेक्ष्य

Anil Kumar Singh Kushwaha

Assistant Professor, Ganga College of Education, Dujana, Jhajjar, Haryana, (M.A.-Geography, Philosophy, M.Ed. NET-Geography, Education)

शोध-सार

एक ऐसा अदभूत संसार है जो लगातार बदल रहा है, ऐसे में केवल एक वाक्य है जो शिक्षा तथा मानव दोनों के लिए सत् एवं सनातन है, वो है- चरित्र व मानवीय मूल्यों का महत्व। मूल्य आधारित शिक्षा आज के जीवन में सुधार हेतु एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में है, जो छात्रों के नैतिक तथा जीवन मूल्यों को उचित आकर देने में सहायक होता है। इस टूल के माध्यम से अखंडता, सम्मान, ईमानदारी तथा परोपकार जैसे अमूल्य गुणों को स्थापित करना है। मूल्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को अच्छा चरित्र, सहभागिता के गुणों, जीवन व् परिवार तथा समाज सम्बन्धी निर्णय लेनी की क्षमता आदि जैसे कौशलों को विकसित करने में बालक को सशक्त बनाता है।

मूल्य आधारित शिक्षा एक शैक्षिक चिन्तन है, यद्यपि यह अकादमिक ज्ञान से भिन्न होता है तथा यह बालकों के अखंडता के भाव, सम्मान, ईमानदारी, परोपकार तथा नैतिक मूल्यों एवं भावात्मक विकास के पोषण स्तर पर अपना ध्यान केन्द्रित करने पर बल देता है, यद्यपि शैक्षणिक उत्कृष्टता नि:संदेह एक छात्र के जीवन की यात्रा का प्रभावपूर्ण पक्ष है। भारत के अधिकांश स्कूल व् कालेज इस बात को समझते ही नहीं ही कि अकादमिक ज्ञान के साथ-साथ बालक के जीवन मूल्य तथा चरित्र का विकास भी उसके अच्छे व्यक्तित्व एवं सुखी व् समृद्ध जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। अच्छे चरित्र व् व्यक्तित्व का विकास मूल्यधारित शिक्षा के माध्यम से अखंडता के भाव, सम्मान, ईमानदारी, परोपकार तथा नैतिकता जैसे अनेकों मूल्यों को समझने, अभ्यास करने तथा आत्मसात और सिखाने के लिए एक संरचित माँडल तैयार किया जा सकता है। भारत के स्कूलों तथा कालेजों में एक ऐसा वातावरण बनाने की आवश्यकता है जहाँ अकादमिक उपलब्धि के समकक्ष ही मूल्यधारित शिक्षा को भी महत्व प्रदान किया जाना चाहिए। भारत के कुछ स्कूलों (पतंजलि संचालित शिक्षा एवं गुरूकुल शिक्षा प्रणाली) में मूल्य-आधारित शिक्षा के महत्व को समझा जाता है तथा अकादमिक के रूप में ही जीवन मूल्यों से सम्बंधित शिक्षा को भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

प्रमुख शब्द- जीवन मूल्य, शिक्षा, नैतिकता, सहयोग की भावना, चरित्र व् व्यक्तित्व आदि।

प्रस्तावना

1. मूल्यआधारित शिक्षा की प्राचीन स्थिति:-

हमारे दृष्टिकोण से प्राचीन काल में आदर्शवाद को अधिक बल दिया जाता था। परन्तु स्वतंत्रता से पूर्व की बात करे तो सबसे अधिक मजबूत विचार धारा मूल्यवाद था। जिस प्रकार पश्चात् संस्कृति में तार्किक प्रत्ययवाद का उत्थान मूल्यपरक प्रत्यायवाद में हुआ, ठीक उसी प्रकार भारतीय प्रत्यायवाद का भी विकास परमार्थवाद अथवा परम मूल्यवाद में विकसित हुआ। एक तरफ परम मूल्यवाद ने भावाद्वैत, विशिष्टाद्वैत, आत्माद्वैत, शुध्दाद्वैत, द्वैत एवं भेदाभेद आदि के विचारित संघर्षो को शांत करने में अपनी भूमिका निभायी क्योंकि ये सभी एक ही परमार्थ में विश्वास करते है वही दूसरी तरफ मूल्यवाद ने परमार्थ के प्रकृति में भेद मानकर भौतिकवाद-अध्यात्मवाद और यथार्थवाद-प्रत्यायवाद जैसे विवाद को भी समाप्त कर दिया। जिन महात्माओं ने मानववाद को अग्रेषित किया है वे भी एक मुल्यवादी ही तो है, क्योंकि वे मानवीमूल्यों की प्राप्ति के लिए कार्यशील है। भाषा-विवेचना एवं अनुभववाद भी विशेषत: सुन्दरम् और शिवम् जैसे मूल्यों को अपनाता है। इसी प्रकार 'दरिद्रनारायण की सेवा' और जनता-जनार्दन एक नवीन मूल्य हैं। विभिन्न धार्मिक एकता का प्रचार-प्रसार करने वाले लोग भी एक तरह से इन्हीं मूल्यों को प्रसारित करते है। इसी तरह साम्यवाद एवं समाजवाद में लगे लोग भी मानव-मूल्यों की प्रतिष्ठा में समर्पित होते हैं। 'इस प्रकार हम मानवतावाद को एक महत्वपूर्ण मूल्य सिद्धान्त मान सकते है। मूल्य आधारित सिद्धान्तों का विशेष रूप से प्रचार-प्रसार कर रहे लोगों में से कुछ प्रमुख जैसे डॉ. राधा कमल मुखर्जी, डॉ. नंदकिशोर देवराज, डॉ. दयाकृष्ण, अनंतगणेश जावड़ेकर आदि लोगों का नाम उल्लेखनीय है। सामान्य: लेखक भी मूल्यवाद में विशेष रुचि रखता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानवतावाद तथा राम मनोहर लोहिया का समाजवाद (1910-1967) का सिद्धान्त मूल्यवाद के अंतर्गत ही आता है। वास्तव में एकात्मक मानवतावाद अद्वैत वेदान्त के अटल सिद्धात का समाजवादी क्षेत्रों में प्रयोग है। परन्तु राम मनोहर लोहिया का समाजवाद सर्वथा एक नया वैचारिक-दर्शन है, जो एक सम्पूर्ण समाज के पूर्ण समाज-दर्शन के रूप में है। चौखम्भा राज्य की अवधारणा, सात क्रांतियों की अवधारणा, विशेष अवसर का सिद्धान्त, अमेरिका, रूस तथा इंग्लैण्ड की विचारधारा से एक सामान दूरी का उसूल, वेशभूषा, लोकभाषा, लोकरीति, लोकहार एवं लोकदृष्टि का प्रसार बुद्धिजीवी और श्रमिक जीवन की आजीविका में संभवतः बराबरी के अनेक उसूलों को जन्म देकर राम मनोहर लोहिया के द्वारा भारतीय समाजवाद को सैद्धांतिक रूप से सूत्रबद्ध करने का सरहानी कार्य किया गया। यह कहने में तनिक भी संशय नहीं है कि राम मनोहर लोहिया का विचार-दर्शन एक नवीन क्रांति का उद्घोष दर्शन है, वे भारतीय समाजवाद के संस्थापक और सूत्रधार कहे जाते है और उन्होंने गाँधी के दर्शन में प्रयुक्त अहिंसात्मक विधियों का उपयोग करके एक नया समाजवाद की ओर जाने का कार्य किया जो मूल्यवाद से सम्बंधित है। राम मनोहर लोहिया के दर्शन का विकास मुख्यतः 1952 से लेकर 1958 तक हुआ है। इस

प्रकार देखे तो स्वतन्त्र भारतीय दर्शन में मूल्यों के समायोजन में लोहिया के दर्शन का प्रथम स्थान है। उन्होंने सामाजिक मूल्यों को समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने का कार्य किया है जिससे प्राचीन और मानवोचित मूल्यों की पुनर्स्थापना किया जा सकता है।[1]

इन मानवोचित शैक्षिक मूल्यों को छात्रों तक पहुँचाने के लिए माता-पिता, परिवार, शिक्षक, समाज और अनुशासन सम्बन्धी शिक्षा अपनी महत्व पूर्ण भूमिका निभाता है। यह भूमिका प्राचीन काल में वैदिक शिक्षा के रूप में शैक्षिक मूल्यों को धार्मिक आदर्श के रूप में छात्रो को सिखाये जाते थे। वैदिक युग के धर्मसूत्रों में यह बात उल्लेखनीय है कि माँ अपने बच्चों की श्रेष्ठतम गुरू है। अनेक विद्वान पिता को भी शिक्षक के रूप में स्वीकार करते है। गुरुकुलों की स्थापना प्राय: अरण्यक, उपवनों और नगरों अथवा ग्रामों में किया जाता था। सामान्यत: दार्शनिक प्रव्रित्तिओ के आचार्य अरण्यक में निवास करते थे एवं अध्ययन तथा चिन्तन मनन का कार्य करते थे। वाल्मीकि, कण्व, संदीपनी आदि हमारे आचार्यो के आश्रम अरण्यक में ही स्थित थे। यहाँ पर ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन तथा साथ ही साथ नागरिक शास्त्र भी अध्ययन कराये जाते थे। उक्त सभी विषयों का आधार मानवीय और शैक्षिक मूल्य होते थे। यद्यपि वैदिक काल में शिक्षा के लिए परिषद्, शाखा एवं चरण जैसे संघों की स्थापना हो गया था, परन्तु सार्वजनिक स्तर पर व्यवस्थित शिक्षा केन्द्रों की स्थापना बौद्धों द्वारा की गयी थी।[2]

2. मूल्यआधारित शिक्षा की मध्यकालीन स्थिति:-

विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमण से पूर्व भारत की आध्यात्म मूल्य आधारित शिक्षा बहुत अधिक विकसित अवस्था में थी। परन्तु विदेशीयों ने मध्य काल में बिना किसी योजना ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था और उसके मूल्यों नष्ट करने का कार्य किया तथा उसके स्थान पर कोई उचित प्रावधान या व्यवस्था नहीं की उपलब्ध नहीं कराया। परन्तु ऐसा नहीं है की भारत की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था नष्ट हो गयी, अपितु बड़ें-बड़ें शिक्षण संस्थानों को नष्ट किया गया था। जैसे अनपढ़ सरदार बख्तियार खिलजी द्वारा नालन्दा विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया गया था। उसी प्रकार विक्रमशिला विश्वविद्यालय, वल्लभी तथा अनेकों गुरूकूलों को जला दिया गया। अत: बड़े शिक्षण संस्थान तो नहीं रहा परन्तु प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का पूरा तंत्र हमारे सारे देश में था। जहाँ भारतीय राजा मांडलिक के रूप में विद्यमान थे, वहाँ पर छोटे स्कूलों को बनवाया और चलवाया गये। जिसके द्वारा भारतीय मूल्यों को बचाया जा सका।[3]

3. मूल्यआधारित ब्रिटिश साम्राज्य में शिक्षा की स्थिति:-

अंग्रेज भारत में व्यापार करने के लिए आये, परन्तु कुछ ही समय में अंग्रेज भारत में शासन स्थापित करने की ओर अग्रसर हो गये, इसका प्रमुख कारण भारतीय राजाओं एवं मुस्लिम शासकों का आपस में एकता का न होना माना जा सकता है। अंग्रेज भारत में शासन की स्थिति में आते ही सर्वप्रथम भारतीय मानवीय मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली का सर्वे किया। उस सर्वे की रिपोर्ट की माने तो यह कहाँ गया कि इंगलैंड एवं स्काटलैंड तथा कुछ अंशो में भारत में उपलब्ध है। जो सही नहीं है। हमारी सभी मान्यताओं और हमारे मूल्यों एवं इतिहास जो हमें पढाये गये है उन्हें झुठलाने वाली ये सभी रिपोर्ट्स बनाए गये है। 1757 ई. में अंग्रेजो द्वारा प्लासी का युद्ध विजय के उपरान्त ईस्ट इंडिया कम्पनी का बंगाल पर अधिकार होने के उपरान्त, जब अंग्रेज अपना प्रशासन तंत्र को लागू करने का प्रयास किया तो उन्हें ज्ञात हुआ की 34 प्रतिशत कर वसूली योग्य भूमि से कोई कर नहीं लिया जाता है। इसका कारण यह था की लगभग 34 प्रतिशत भूमि अध्ययन शालाओं हेतु आबंटित थी। इसको देखते हुए अंग्रेजो की कम्पनी ने अपने अधिकार के क्षेत्र में शिक्षा के सर्वे कर सूचना जुटाने की योजना बनायी।[4] हमारी मूल्य आधारित शिक्षा जो ज्ञान तथा नैतिक गुणों के विकास को प्राथमिकता प्रदान करता था उसका अंदाजा लार्ड मैकाले के निम्न कथन से लगाया जा सकता है, कि "भारत में शासन करना है तो इसकी रीढ़ की हड्डियों को तोड़ना होगा, यह तभी संभव है जब तक की इसकी शिक्षा व्यवस्था को समाप्त न कर दिया जाय।" इसे एडम का सर्वेक्षण तथा उसके तीन प्रतिवेदनों से समझा जा सकता है। लार्ड विलियम बैंटिक ने बंगाल तथा में शिक्षा व्यवस्था का सर्वे कराने के लिए 'एडम' को नियुक्त किया एवं इस कार्य हेतु उसे 1,000 रुपये प्रति माह दिया गया। एडम ने वाइसराय से प्राप्त भत्ते से उत्साहित होकर 1835 में बिहार और बंगाल में संचालित हो रहे पाठशालाओं की शिक्षा व्यवस्था को जानने हेतु सर्वेक्षण कार्य प्रारंभ कर दिया। एडम ने लगातार तीन वर्षों तक भारतीय शिक्षा व्यवस्था का निरिक्षण किया था और उसने तीन वर्षों में तीन प्रतिवेदन वर्ष 1835, 1836 एवं 1838 में क्रमिक रूप से प्रस्तुत किया जिसके प्रमुख अंश निम्नवत है-

प्रथम प्रतिवेदन-(1835) एडम ने बंगाल प्रांत के विद्यालय सम्बन्धी आकड़े प्रस्तुत किया तथा अपने सर्वे के आधार पर बताया कि, बिहार और बंगाल में 1,00,000 विद्यालय संचालित हो रहे थे। ऐसा को ग्रामीण क्षेत्र नहीं था जहा प्राथमिक विद्यालय न हो। प्रत्येक 450 व्यक्तियों एक विद्यालय का संचालन होता था। शिक्षा हेतु अमीर तथा संपन्न लोगों द्वारा जमीन तथा धन दान में दिए जाता था। आर्थिक व्यय का भार राजा, जमीदार एवं तालुकेदार द्वारा व्यवस्था किया जाता था।

द्वितीय प्रतिवेदन-(1836) एडम ने दिसम्बर माह में अपने द्वितीय सर्वेक्षण प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया तथा बताया की राजशाही जनपद के नत्तुर थाने के शैक्षिक प्रदत्त प्रस्तुत किये, पुरे क्षेत्र में 405 गाँव थे इन गावों के 260 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। यहाँ पर कुल 27 विद्यालय थे। जिन विद्यालयों में से 2 में बंगला और फारसी, 4 में अरबी, 4 में फारसी तथा 10 में बंगाली की पढ़ाई किया जा रहा था। 238 गावों के 2380 विद्यार्थी जो 1588 घरो से सम्बन्ध रखते थे वे बच्चे घर पर ही स्कूली शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। अध्यापकों को 5 रुपये 50 पैसे वेतन मिलता था।

तृतीय प्रतिवेदन-(1938) एडम्स द्वारा फरवरी में तीसरी तथा अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। इस बार दक्षिण बिहार, वर्धमान, मुर्शिदाबाद, तिरहुत और वीरभूमि के एरिया का सर्वे कर के आकड़े प्रस्तुत किया गया। उस समय 5 जनपदों में 2567 विद्यालय चलाये जा रहे थे और उन स्कूलों में 30,900 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे। बालिकाओ के लिए अलग से स्कूल संचालित हो रहा था। बालिकाओं के स्कूलों की कुल संख्या 6 थे एवं 210 छात्राएं अध्ययन कर रही थी। 8 विद्यालयों में अन्य भाषाओं के अंग्रेजी को भी 250 छात्रों को पढ़ाया जा रहा था।[5]

उक्त कथनों का तात्पर्य है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था बहुत ही समृद्ध था अन्यथा अंग्रेजो को शासन करने में कोई समस्या नहीं आती। हमारी प्राचीन शिक्षा में भूमि को माता की उपाधि से अल्कंकृत करने, राष्ट्र को माता मानना, राष्ट्र हित में प्राण का बलिदान देना, कमजोरों की रक्षा करना, विश्व-बंधुत्व, वसुधैव कुटुम्बकम, मातृदेवो भव:,

पित्रदेवो भवः जैसे मूल्यों के साथ शिक्षा प्रदान की जाती थी।

4. मूल्यआधारित शिक्षा की वर्तमान समय की स्थिति:-

भारत में वर्तमान शिक्षा अथवा आधुनिक शिक्षा के प्रणेता के रूप में लार्ड मैकाले का नाम प्रतिष्ठित है। इसके बाद वुड डिस्पैच (1854), हंटर आयोग(1882), बुनियादी शिक्षा (1937-38), राधाकृष्णन आयोग (1948-1949), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953), कोठारी शिक्षा आयोग (1964-1966), राष्ट्रीय शिक्षा योजना (1986) तथा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी मूल्य आधारित शिक्षा को वरीयता प्रदान करने एवं व्यक्तित्व दे विकास को बढ़ावा देने पर बल प्रदान करने की बात करता है। मूल्य आधारित शिक्षा की वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिए देश में व्यापक स्तर पर शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के कार्य को लगातार संपन्न किया जा रहा है। प्रत्येक विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा निर्देशन में सेमिनार, वर्कशाप, ओरिंटेशन तथा सेनेटाईजेशन जैसे अनेक प्रोग्राम का संचालन किया जा रहा है, जो आनलाइन तथा आफलाइन दोनों मूड में संपन्न किया जा रहा है। इन सबके अतरिक्त देश तथा विश्व के विभिन्न संस्थानों द्वारा अनेक खोजपूर्ण कार्य तथा संशोधन किये जा रहे है जिससे मूल्य आधारित शिक्षा का विकास किया जा सके। इस सबके पीछे मूल्य युक्त शिक्षा छात्रों को प्रदान करना ही मुख्य लक्ष्य रहा है। परन्तु विश्व और देश में शिक्षा का मूल्य क्या है इसे निम्नांकित कथनों से स्पष्ट किया जा सकता है-

सच पूछे तो शिक्षा हमारे दिल एवं दिमाग दोनों को प्रभावित करता है, जिससे प्रभावित छात्र जो भी करता है उससे हमारा परिवार, समाज, देश और सम्पूर्ण विश्व प्रभावित होता है। एक बिना पढ़ा लिखा चोर माल गाड़ी से सामान चुरा कर ले जाएगा, परन्तु पढ़ा-लिखा चोर मालगाड़ी को ही चुरा कर ले जायेगा।

विश्वविद्यालय (University) से युवक बहुत योग्य परन्तु पढ़े-लिखे जाहिल, गवार बनाकर बहार निकल रहे है क्यों कि हम युवाओं को नैतिकता का कोई आधार नहीं दे पा रहे हैं जिसकी उन्हें ज्यादा से ज्यादा तलाश है।

-स्टीवन मूलर, प्रेजीडेंट, जॉन-हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी [6]

युनिवर्सिटी का प्रथम आवश्यक कार्य ज्ञान देना तथा ऊँचे चरित्र निर्माण का होता है, जबकि वह व्यापारिक तथा तकनीकी शिक्षा को प्रश्रय देती है।

-विंस्टन चर्चिल[7]

उक्त कथनों से स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा मूल्यों को बढ़ा पाने में असमर्थ है क्योकि यदि ऐसा नहीं होता तो आज विश्व में शांति होती, पर शांति तो है ही नहीं। जबकि हमारी गुरूकूल परम्परा की मूल्य वर्धित शिक्षा छात्रो को प्रदान किया जाता तो संभवतः चहु ओर शांति होती। हमारे वेदों और गुरुकुलों के माध्यम से मूल्य वर्धित शिक्षा प्रदान किया जाता था। वेदों के इस वाक्य से स्पष्ट है:- यजुर्वेद में 'द्योः शान्तिरंतरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्र शान्तिः सर्वं शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सामा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥'

-शुक्ल यजुर्वेद, 36/17[8]

कार्यप्रणाली

1. मूल्य आधारित शिक्षा की परिभाषा:-

मूल्य आधारित शिक्षा की अनेकों परिभाषाएं की गयी है जिनमें से कुछ निम्नांकित है-

1. **लेविन (1964)** के **अनुसार** "लालच की भावना में उच्चतम रुकावट सकारात्मक रूप में शारीरिक दण्ड की प्रक्रिया से है और नकारात्मक रूप से विचार और तर्क शक्ति की प्रक्रिया है।"
2. गुरुराजा **(1978)** के अनुसंधान में पाया कि "नैतिक मूल्यों का ज्ञान, अभिप्राय पूर्णता से प्रभावित होता है।"
3. **बरटोन (1961)** के **अनुसार-** "नैतिक विकास एवं संयुक्त घटना है, न कि पृथक्-पृथक प्रक्रिया।"

2. मूल्य आधारित शिक्षा की महत्व व् आवश्यकता:-

वर्तमान दुनिया में सभी चाहते है कि उनके बच्चे मूल्यों को सीखे, स्वयं भी अभिभावक मूल्यों को महत्व देता है, परन्तु जब उसके पालन की बात आती है तो उसके स्वार्थ बाधा खड़ी करने लगते है। मूल्य शिक्षा को सामान्यत: अनुशासन के रूप में देखा जाता है ऐसा नहीं होना चाहिए, यद्यपि मूल्य शिक्षा को शिक्षा प्रणाली के अन्दर निहित होना चाहिए। 21वीं सदी में मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व और आवश्यकता को प्रदर्शित करने वाले प्रमुख बिन्दु निम्नाकित है-

1. मूल्य शिक्षा कठिन परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने में सहायक है। साथ ही निर्णय लेने की क्षमता में सुधारात्मक कदम होता है।
2. बढ़ती उम्र तथा अनुभव के साथ जिम्मेदारी और जवाबदेही का दायरा बढ़ता जाता है। दबाव के कारण कई बार अर्थ हीनता के भाव बढ़ने लगते है जिससे मानसिक विकार, कैरियर सम्बन्धी बाधा और जीवन में बढ़ते असन्तोष को उत्पन्न करता है, जीवन के उक्त रिक्तता को मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा कम किया जा सकता है।
3. मूल्य आधारित शिक्षा से जिज्ञासा को उत्पन्न करने एवं मूल्यों आधारित हितों को बढाने और जीवन कौशल विकास में सहायता करता है।
4. जब लोग समाज तथा समाज के लोगों के जीवन मूल्यों अध्ययन करते है, तो वे अपने लक्ष्यों और उद्धेश्यो के प्राप्ति हेतु मूल्यों के कारण ही उत्साहित रहते है, जिससे जागरूकता का विकास होता है। उक्त मूल्यों से विचार-शीलता का विकास होता है जिससे जीवन में पूर्णता आती हैं।
5. मूल्य आधारित शिक्षा का मुख्य महत्व यह है कि इससे भावनाएं पीछे छुट जाती है एवं व्यक्तित्व विकास के लिए पूर्ण औवसर प्राप्त होता है।

3. मूल्य आधारित शिक्षा के उद्धेश्य:- मूल्य आधारित शिक्षा के उद्देश्य निम्नांकित है-

1. मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा बच्चों के व्यक्तित्व विकास के विविध पक्षों (मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक एवं भावात्मक) के विकास के लिए एक उचित दृष्टिकोण विकसित करना।
2. मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा राष्ट्र भक्ति के मनोभाव के साथ-साथ एक अच्छे नागरिक के मूल्यों को विकसित करना।
3. मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा बच्चों में पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय लेवल पर विश्व-बंधुत्व के भाव को समझने में सहायता करना।
4. मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा बच्चों में शिष्टाचार तथा जिम्मेदारी और सहयोग के भाव को विकसित करना।
5. मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा नैतिक सिद्धान्तों के आधार पर भाषा चयन के निर्णय के बारे में बच्चों को सिखाना।
6. मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा बच्चों के सोचने की क्षमता तथा जीवन जीने के लोकतांत्रिक तरीको को बढ़ावा देना।
7. मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा सहनशीलता तथा विविधता पूर्ण संस्कृतियों एवं विविध धार्मिक मनोभाव और विश्वासों व् उचित मान्यताओं के प्रति सम्मान के भाव को विकसित करना।

4. मूल्य आधारित शिक्षा के कुछ प्रमुख सिद्धान्त:-

1. समानता
2. सहानुभूति
3. शिष्टाचार व् सभी का सम्मान
4. स्वास्थ्य की देखभाल
5. सकारात्मक चिन्तन
6. मानसिक और शारीरिक विकास

यद्यपि शिक्षा का अर्थ आत्म निहित क्षमता को बहार निकलना, ग्रहण करना या अर्जित करना है तो मूल्य आधारित शिक्षा का अर्थ होगा कि, 'जीवन के सार तत्व का पता लगाना और उसको अन्दर से बहार निकलना या बाहर से अर्जित करना। मूल्य शिक्षा में व्यक्ति के जीवन, समाज, परिवार एवं राज्य के अनिवार्य मूल्यों को ग्रहण किये जाने की आवश्यकता होती है, तभी वह समग्र तथा पूर्ण शिक्षा कही जा सकती है। वास्तव में मूल्य आधारित शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं चरित्र के सकारात्मक विकास का एक अचूक साधन है।'

5. मूल्य आधारित शिक्षा से लाभ:-

मूल्य आधारित शिक्षा के लाभ निम्नांकित है-

1. मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम जीवन के उद्धेश्यों को प्राप्त करने तथा जीवन के विविध पक्षों को विकसित करने में सहायता करता है।
2. मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से छात्र अपने व्यक्तित्व को उचित आकार प्रदान करने तथा जीवन के संघर्षो के प्रति विनम्रता एवं आशावादिता का विकास करता है।
3. मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से हर परिस्थिति में छात्रो एवं व्यस्कों को हर परिस्थितियों में सकारात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखने तथा आने वाली चुनौतियों से प्रतिस्पर्धा हेतु तत्पर बनाता है।
4. मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा छात्रों को उनके जीवन सम्बन्धी उद्धेश्यों को जानने तथा उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सही मार्ग प्रशस्त करता है।
5. मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा छात्रों को दूसरो के प्रति समझदार तथा और अधिक जिम्मेदार बनाता है।
6. मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से छात्र अच्छे चरित्र का निर्माण करता है जिससे छात्र का अध्यात्मिक विकास होता है जो हमें मानवता की विकास के ओर ले जाता है।

6. मूल्य आधारित शिक्षा में शिक्षक:-

वैसे तो प्रकृति दुनिया का सबसे बढ़ा गुरू है, परन्तु माता को प्रथम गुरू माना गया हैं। माता के उपरान्त पिता, परिवार, शिक्षक और समाज को गुरू की मान्यता प्राप्त हैं। एक शिक्षक का सबसे प्रमुख कार्य यह है कि 'वे अपने छात्रों के तात्कालिक जीवन और भविष्यों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान करना चाहिए। शिक्षक को शिक्षा प्रदान करते समय यह ध्यान देना चाहिए की शिक्षा में परम्परा के साथ नवीनता का सम्मिश्रण होना चाहिए। शिक्षक को शिक्षण हेतु पुस्तकीय ज्ञान पर निर्भरता कम करते हुए व्यवहारिक ज्ञान पर अधिक बल देना चाहिए। चरित्र निर्माण की प्रक्रिया घर-परिवार, समाज व् स्कूल से प्रारम्भ होता है। औपचारिक रूप से स्कूल से बच्चों के चरित्र निर्माण का प्रारम्भ शिक्षकों के माध्यम से होता है। अत: नैतिक मूल्यों की शिक्षा के विकास में शिक्षक की पृष्ठभूमि अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

वर्तमान शिक्षा की परिस्थितियों एवं प्राचीन शिक्षा की परिस्थितियों और हमारे वर्तमान गूरूकुलों के छात्रों के जीवन मूल्यों को आधार मानते हुए, एवं विश्व प्रसिद्ध व्यक्तियो के कथनों का विश्लेषण, अवलोकन व् समीक्षा कर के लेखक मूल्य आधारित शिक्षा के विषय में एक विचार प्रकट कर रहा है।

परिणाम

"कक्षा में बुनियादी मानवीय मूल्यों को उत्तरोत्तर विस्तारित किया जाना चाहिए। सहयोग, करूणा, मित्रता, हँसी, मुस्कराहट, मदद करने की इच्छा, अपनेपन का भाव, हल्कापन एवं एक दुसरे का सहयोग आदि जैसे प्रकृति प्रदत्त अन्तर्निहित मूल्यों के साथ एक बच्चा पैदा होता है, इन अन्तर्निहित मूल्यों को एक शिक्षक के द्वारा उजागर

करने की परम आवश्यकता होती है।

-गुरूदेव श्री श्री रविशंकर[9]

'यदि हम आप चाहते हैं कि दूसरे लोग जीवन में महत्वपूर्ण मूल्य सीखें, तो उन्हें सिखाना एक बेहतर विकल्प हो सकता है, परन्तु सबसे उचित विधि यह होगा कि आप स्वयं उन महत्वपूर्ण जीवन मूल्यों के अनुरूप जीवन जी कर एक आदर्श बनें।'

-अनिल कुमार सिंह कुशवाहा (लेखक)

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की बात करे तो शिक्षा एक व्यापार बन गया है। समस्त शिक्षण संस्थान विशेष कर प्राइवेट संस्थान ज्ञान के स्थान पर केवल प्रमाण-पत्र व् ग्रेड देने में लगे है। साथ ही अकादमिक सफलता के पीछे भागते है अर्थात वर्तमान शिक्षा केवल काम करने वाले रोबोट को तैयार कर रहे है। ऐसा इस लिए है की संस्थान, परिवार, समाज और सफलता का जनून हमारे छात्रों के नैतिकता के पतन का कारण बनते है। माता-पिता अपने बच्चों की उपलब्धियों को सामाजिक सम्मान का विषय मान लेते है, यहाँ तक पाया गया है कि छात्र अच्छा मार्क प्राप्त करने के लिए चोरी, झूठ बोलना, अपने मानसिक तनाव को दूर करने के लिए नशा का सेवन आदि को करने लगते है। अधिकतर बच्चे माता-पिता और समाज की आकांक्षाओं का दबाव नहीं झेल पाते है, जिससे वे डिप्रेशन का शिकार हो जाते है। यहाँ तक की वे आत्महत्या जैसे कार्य भी कर जाते है। कुछ बच्चे झूठ बोलते है, तथा अपने सामाजिक स्टेट्स को मेंटेन करने के लिए आपराधिक प्रवृत्तियों में उलझ जाते है तथा कभी-कभी देश के विरुद्ध भी कार्य करने से नहीं चुकते है।

आजादी के इतने वर्षों के बाद तमाम प्रयासों के उपरांत मूल्य सम्बन्धी शिक्षा के परिणाम पर बात करे तो कुछ परिणाम हमारे सामने है जिससे हम अपनी गुणवत्ता को समझ सकते है जिसे बिन्दुवार देख सकते है[10]-

1. UDISE-एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली, 2019-20 के अनुसार, मात्र 12 प्रतिशत स्कूलों में आनलाइन की व्यवस्था तथा मात्र 30 प्रतिशत में कम्प्यूटर उपलब्ध है।
2. मात्र 42 प्रतिशत स्कूलों में उचित फर्नीचर की कमी थी, 23 प्रतिशत में लाइट की सुविधा नहीं थी, 22 प्रतिशत में शारीरिक रूप से दिव्यांग को मूलभूत सुविधा नहीं थी तथा 15 प्रतिशत में सफाई, स्वच्छता और जल की व्यवस्था समुचित नहीं था।
3. प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों में ड्रापआउट की दर काफी उच्च है।
4. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के आधार 2019-2020 विद्यालय वर्ष से पूर्व 6-17 आयु की बालिकाये 21.4% एवं बालक 35.7% विद्यालय में न जाने का मुख्य कारण पढ़ाई में ध्यान का न होना बताया है।
5. अच्छे संस्थानों में प्रवेश के लिए कड़ी प्रतिस्पर्द्धा के कारण भारत में बड़ी चुनौतीपूर्ण वातावरण का विकास हो गया है। इससे अनेक छात्र शिक्षा के लिए विदेश जाना पसन्द करते है और वही रह जाते है जिससे भारत देश अच्छी प्रतिभा को खो देता है। भारत में 'ब्रेन ड्रेन' की यह एक आम समस्या हो गयी है।

वर्तमान शिक्षा का एक बहुत बड़ा दोष यह है कि अधिकतर संस्थानों का संचालन अनपढ लोग करते है। जिनका मुख्य उद्देश्य धन कमाना होता है न शिक्षा प्रदान करना। अमीर वर्ग अपने स्टेट्स के लिए ऐसे ही स्कूलों में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाते है। ऐसे संस्थानों में प्रवेश के पीछे पढाई नहीं अपितु अभिभावक का अपने स्टेट्स को मेंटेन करने का लक्ष्य होता है।

सरकारी शिक्षा व्यवस्था की बात करे तो वहा के शिक्षकों की स्थिति और भयानक है। अधिक्तर सरकारी स्कूलों में शिक्षक केवल हाजरी लगाने के लिए जाते है। कुछ एक अध्यापकों को छोड़कर कोई शिक्षण करने व् कराने में रुचि नहीं लेता है, अपितु केवल वेतन उतारने तथा राजनीति करने में व्यस्त रहते है।

चर्चा

भारत जैसे देशों में मानवीय मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, पारिवारिक मूल्यों, राजनीतिक मूल्यों तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की चर्चा तो बहुत अधिक होता है, परन्तु उसको फालो नहीं किया जाता है। जब हम शिक्षा की बात करते है तो सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यह है कि मूल्य आधारित शिक्षा कैसा होना चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर भारतीय वेदों और उपनिषद् से प्राप्त होता है। यदपि सुकरात[11] के अनुसार एक शिक्षित व्यक्ति की परिभाषा क्या है? उसे निम्नांकित बिन्दुओ से समझ सकते है-

1. वह व्यक्ति जो असंभावित अथवा कष्टकारक परिस्थितियों को नियंत्रित करता हो न की उनसे नियंत्रित हो।
2. अपने जीवन की सभी सामान्य अथवा असामान्य स्थितियों का साहस पूर्वक सामना तथा तर्क पूर्ण समाधान कर सके।
3. जीवन के प्रति तथा लोगों के प्रति ईमानदार रहना।
4. जीवन में अप्रिय लगाने वाले लोगों का भी अच्छे एवं नेक हृदय से सामना करता है।
5. जीवन में प्राप्त होने वाले सुखों पर नियंत्रण रखने में सक्षम होता है।
6. जीवन में मिलने वाली असफलताओं से हार नहीं मानता हो एवं उससे सीखता हो और आगे बढ़ता है।
7. जीवन में मिलने वाली सफलता, यश, प्रतिष्ठा आदि पर गुरूर नहीं करता हो।
8. जीवन में मिलने वाले दुखो एवं विपत्तियों से घबड़ाता नहीं है।

मूल्यधारित शिक्षा एक महत्वपूर्ण शिक्षण ढांचा है, जिसकों क्लास में रोल-प्ले एवं विष्यनुकूलता के साथ-साथ समाज के जीवंत माडल के माध्यम से पढ़ाया जाता है। यह क्रिया एक शिक्षक के माध्यम से बिना किसी समझौते के पढ़ाया जाना चाहिए। जो अपने छात्रों को उन जीवन मूल्यों के साथ आगे बढाने में पूर्ण विश्वास रखता हो तथा

छात्रों के समग्र विकास में सहायता करता हो। मूल्य आधारित शिक्षा न केवल शिक्षण के लिए अपितु इसके माध्यम से सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षणिक एवं जीवन जीने की कला के विकास हेतु सफल वातावरण विकसित होता है। मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करने से छात्रों में विकासात्मक वातावरण विकसित होता है, जैसे अच्छे वातावरण में शिक्षण की क्षमता में वृद्धि, कक्षा में अधिक एकाग्रता, प्रश्नों के माध्यम से छात्र व् शिक्षक में सहयोगात्मक प्रक्रिया में वृद्धि, स्वयं की शिक्षा के लिए छात्रों में अधिक जवाबदेही अथवा जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार में वृद्धि और छात्रों अपने द्वारा किये गये कार्यो में गर्व का अनुभव करते है। साथ ही छात्र के व्यवहार में अत्यधिक सहयोग व् सहिष्णुता का विकास दिखाई डेता है, जिसके परिणाम स्वरूप खेल के मैदान, क्लासरूप तथा जीवन के अनेक क्षेत्रों में सामंजस्यपूर्ण परिस्थिति का विकास होता है। मूल्यधारित शिक्षा के द्वारा बच्चों को मजबूत चरित्र और जीवन मूल्यों से युक्त लोगों की श्रेणी में विकसित कर पाते है, जो मानव जाति के लाभ व ज्ञान के वृद्धि के लिए उपयोगी होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मूल्य पर निरूपित शिक्षा वर्तमान परम्परा गत चली आ रही आधुनिक शिक्षा प्रतिमान से प्राप्त शिक्षा से परे हो जाति है। व्यक्ति के व्यक्तित्व को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जाता है जो न केवल अकादमिक तौर पर कुशलता प्राप्त करता है बल्कि उसमें प्रबल शक्तिशाली चरित्र का निर्माण हो पाता है, यद्यपि सहानुभूति, ईमानदारी, सत्यवादिता, न्यायप्रियता, अनुशासनप्रियता, एवं जिम्मेदारी जैसे अनेक और महत्वपूर्ण भावना का विकास किया जाता है। मूल्य आधारित शिक्षा से छात्रों का अकादमिक के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, जीवन मूल्यों की परख, विषम परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षित व्यक्ति समाज में अपना सार्थक योगदान प्रदान कर पाने में सक्षम होता है, साथ ही उद्देश्य पूर्ण तथा ईमानदारीपूर्वक नेतृत्व करने की क्षमता आती है। गुरूकुल प्रणाली से संचालित स्कूलों, पतंजलि द्वारा संचालित शिक्षण संसथान, देव संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, रविन्द्र नाथ टैगोर का शांति निकेतन (विश्व भारती) जैसे अनेकों संस्थानों के छात्र अकादमिक के साथ-साथ चारित्रिक तथा जीवन सम्बन्धी मूल्यों में बेहरत पाये जाते है।[12] इन छात्रों में भारतीयता की झलक पायी जाती है। यह अनेक अध्ययनों में पाया गया है।

मूल्य की शिक्षा से छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विभेदीकरण, सहयोग, साहस, प्रेम, विश्व-बंधुत्व, आत्म-सम्मान, नियंत्रण क्षमता, सुसंस्कृति के विकास की क्षमता आदि गुणों से संपन्न होता है। मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से संविधान सम्मत उत्तरदायी नागरिक के निर्माण का मार्ग प्रसस्त होता है। शिक्षा द्वारा जो मूल्य प्रदान किया जाता है वह समाज द्वारा स्वीकृत होता है।

मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करके देश के छात्रों में भारतीय संस्कृति के साथ-साथ उसे आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के साथ जोड़ा जाएगा। मूल्यों के द्वारा छात्र अपनी शक्तियों पर नियंत्रण रखना सीखता है। विश्व में तथा देश में शांति के लिए यह आवश्यक है कि मानव को अपनी शक्ति पर नियंत्रण रखना सीखना होगा, परन्तु विश्व में हो रहे युद्ध यह बता रहे है, कि जिस शांति की हम खोज कर रहे है वह शांतिपूर्ण वातावरण वर्तमान मूल्य रहित आधुनिक शिक्षा से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वर्तमान शिक्षा व् तकनीकीकरण तथा वैज्ञानिक युग में मूल्य रहित ज्ञान और शक्ति अर्जन का कार्य हो रहा है पर शक्ति नियंत्रण की क्षमता मानवों की लगातार कम हो रही है, इसी का परिणाम है विश्व की अशांति व् मानव की मानसिक अशांति बनी हुई है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी (Harvard University) के विलियम जेम्स (William James) का कथन है कि "मेरी पीढ़ी की सबसे बड़ी खोज यह है कि इंसान अपने नजरिए में बदलाव लाकर अपनी जिंदगी को बेहतर बना सकता हैं।"[13] यही नजरिया हम अपने बच्चों को नहीं प्रदान कर पाते है। मानव-मूल्यों के अभाव में विश्वशांति तथा संतुलित विकास संभव नहीं है। मानव-मूल्य का विकास बिना मूल्य-आधारित शिक्षा तथा वसुधैव कुटुम्बकम के भाव के संभव नहीं है। अपितु यह आवश्यक है कि मूल्य आधारित शिक्षा का विकास किया जाय। "मनुष्य ही हमारी सबसे बड़ा अमूल्य पूँजी अथवा सबसे बड़ा बोझ हो सकता है।" मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से इसे बोझ बनने से बचाने की आवश्यकता है।

संदर्श ग्रन्थ सूची

1. सक्सेना, डॉ.लक्ष्मी : 'समकालीन भारतीय दर्शन की प्रवृत्तियाँ', उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2010, पेज नम्बर 22-25।
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9A%E0%A5%80%E0%A4%A8_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE
3. https://hindi.theprint.in/culture/british-indian-education-system-india-university-schools/437712/
4. https://hindi.theprint.in/culture/british-indian-education-system-india-university-schools/437712/
5. मदान, पूनम एवं पाण्डेय, रामशकल: 'समसामयिक भारत और शिक्षा', अग्रवाल ग्रुप आफ पब्लिकेशन, आगरा-2 (ISBN-978-93-84134-12-9), पेज नंबर-35 व 36.
6. खेड़ा, शिव : 'जीत आपकी' , फुल सर्कल पब्लिशिंग नई दिल्ली-110003, (ISBN-81-7621-067-6) अड़तीसवां रिप्रिंट: अगस्त,2003, पेज नंबर-39.
7. खेड़ा, शिव : 'जीत आपकी' , फुल सर्कल पब्लिशिंग नई दिल्ली-110003, (ISBN-81-7621-067-6) अड़तीसवां रिप्रिंट: अगस्त,2003, पेज नंबर-41.
8. शुक्ल यजुर्वेद, 36/17
9. https://ssrvm.org/blog/cultivating-character-the-power-of-value-based-education

10. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/reforms-in-education-sector-1
11. खेड़ा, शिव : 'जीत आपकी' , फुल सर्कल पब्लिशिंग नई दिल्ली-110003, (ISBN-81-7621-067-6) अड़तीसवां रिप्रिंट: अगस्त,2003, पेज नंबर-42.
12. https://robertlandacademy.com/the-benefits-of-a-values-based-education/
13. खेड़ा, शिव : 'जीत आपकी' , फुल सर्कल पब्लिशिंग नई दिल्ली-110003, (ISBN-81-7621-067-6) अड़तीसवां रिप्रिंट: अगस्त,2003, पेज नंबर-17.